International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:**3049-2017**
IJMH 2025; 2(1): 07-11
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 05-01-2025
Accepted: 09-01-2025
Publish : 11-01-2025

अनुराग श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक, इतिहास,
शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय,
मैहर

Correspondence:
अनुराग श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक, इतिहास,
शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय,
मैहर

स्वाधीनता आन्दोलन में नागौद के जलद त्रिमूर्ति का योगदान

अनुराग श्रीवास्तव

सार-

नागौद का राजनैतिक विरासत समृद्ध, अनूठा एवं अकल्पनीय है और यहां की भौगोलिक स्थिति ने राजनैतिक संरचना को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस क्षेत्र का इतिहास सदैव से गौरवपूर्ण रहा है जहाँ पर अधिकार करने के लिए आक्रांताओं को मुहं की खानी पड़ी। इस क्षेत्र की प्राचीन काल में राजनीतिक व्यवस्था को अवलोकन करें तो यहाँ पर जनपद,महाजनपदों के समय से ही साम्राज्यवादी विस्तार की होड़ मची हुई थी। धीरे-धीरे राजपूत काल में गुर्जर प्रतिहारों शासकों ने अपने बाहुबल से नागौद की गौरव पताका को फहराया 1857 की क्रांति में इस भूमि के अनेक नायकों ने अपने प्राणों की आहूति दी। इस क्षेत्र के जलद त्रिमूर्ति ने स्वतंत्रता आंदोलन में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी सदस्य के रूप में शामिल होकर देश को आजाद कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुंजी शब्द- जलद त्रिमूर्ति ,सितपुरा,खमरेही,अमकुई,पी.सी. सी., राष्ट्रीय चेतना,रियासत, कुर्की,उबारीदार, नीति-निधान

वर्तमान में आधुनिक मध्य प्रदेश का उत्तरी भाग बघेलखंड-बुंदेलखंड के नाम से जाना जाता है। यह मध्य प्रदेश के उत्तर-पूर्व में स्थित है जिसके अंतर्गत सागर, शहडोल, सीधी, रीवा, पन्ना, छतरपुर, दमोह, दतिया, टीकमगढ़, सतना तथा उत्तर प्रदेश के हमीरपुर, जालौन, ललितपुर, झाँसी तथा बांदा जिले शामिल है। और इसी क्षेत्र में नागौद का राज्य स्थित है जो विन्ध्याचल श्रेणी में स्थित सतना जिले से लगभग 25 किमी की दूरी पर स्थित है। नागौद की भौगोलिक स्थिति $20^{0}12$ से $20^{0}18$ उत्तरी अक्षांश से $28^{0}88$ से $80^{0}85$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।[1]

नागौद की समुद्र सतह से औसत उचाई 317मीटर है। नागौद राज्य लम्बाई उत्तर से दक्षिण दिशा में 45 किमी. तथा चौड़ाई पूर्व से पश्चिम दिशा में 40 किमी है। इसका कुल क्षेत्रफल 501 वर्ग किलोमीटर है।[2] नागौद राज्य के पूर्व में रघुराज नगर ,पश्चिम में पन्ना और अजयगढ़ तथा दक्षिण में मैहर स्थित है।[3]

[4]

इस रियासत के पूर्व में टमस नदी,पश्चिम में विन्ध्याचल पर्वत की पन्ना श्रेणी, उत्तर दिशा में सिंहपुर गाँव तथा दक्षिण में मैहर नगरी नागौद की सीमा बनाती है। यह रियासत अमरन नदी के किनारे स्थित है। इस

राज्य का पश्चिमी -दक्षिण क्षेत्र छोटी -छोटी पहाड़ियों एवं जंगलों से घिरा हुआ है और पूर्वी तथा उत्तरी क्षेत्र कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त है लगभग राज्य का संपूर्ण हिस्सा रीवा पठार के अंतर्गत आता है ।यहां की धरा को प्रवाहित करने वाली अनेक नदियां है जिसमें तमसा, अमरन, सतना, करारी, बरुआ, कमरो, स्वरगुवा, महानदी, मंगरौला आदि प्रमुख है जिसके कारण यहाँ के लोगों को समृद्ध बनाती हैं।[5]

इस रियासत को राष्ट्रवाद की मुख्य धारा में लाने के लिए भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की शोषणवादी नीतियां थी जिसके पश्चात् राष्ट्रवादी विचारधारा में विश्वास करने वाले लोगों का उदय हुआ जिसका परिणाम विन्ध्य क्षेत्र के नागौद रियासत पर भी पड़ा । भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन से मुक्ति एक कठिन संग्राम का परिणाम था जो अनेक अवस्थाओं से गुजरने के बाद प्राप्त हुई । ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध प्रतिक्रिया, भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना के रूप में हुई जो स्वतंत्रता के पश्चात् शांत हो सकी । यह राष्ट्रीय जागृति इस क्षेत्र में भी दिखाई दी । ब्रिटिश सरकार को यहाँ की जनता के विषय में यह ज्ञान था की इनमें राजनीतिक चेतना कूट -कूट कर भरी हुई है इसलिए अंग्रेजों ने एक बड़ी जेल का निर्माण भी करवाया ताकि अधिक से अधिक लोगों को जेल में रखा जा सके।[6] इस क्षेत्र में राष्ट्रीय आन्दोलन 19 वी सदी के मध्य में प्रारंभ हुआ और प्रमुख रूप से राष्ट्रवाद की भावना का विकास ब्रिटिश साम्राज्यवाद की विस्तारवादी नीति की चुनौतियों के प्रत्युत्तर में हुई। भारत में स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश शासन के अंतर्गत अनेक ऐसी रियासतें थी जो स्वतंत्र रूप से शासन करती थी किन्तु अप्रत्यक्ष नियंत्रण ब्रिटिश सरकार का बना रहता था ।

स्वतंत्रता के समय भारत में लगभग 562 रियासतों थी जिसमें में एक रियासत नागौद थी । 1807 में पन्ना रियासत के अन्तर्गत नागौद का क्षेत्र शामिल था । शिवराज सिंह को 1809 में एक अलग सनद द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई । 1820 में यह रियासत ब्रिटिश संरक्षक बन गया। राजा बलभद्र सिंह को अपने भाई की हत्या के लिए 1831 में पदच्युत कर दिया गया था। फिजुलखर्ची के कारण इस पर रियासत पर बहुत कर्ज हो गया और 1844 में ब्रिटिश प्रशासन ने आर्थिक कु प्रबंधन के आधार पर नागौद के प्रशासन को अपने हाथ में ले लिया। नागौद के शासक 1857 के भारतीय विद्रोह के दौरान अंग्रेज़ों के वफादार बने रहे। फलस्वरूप उन्हें धनवाल की परगना दे दी गई। 1862 में राजा को गोद लेने की अनुमति देने वाले एक सनद प्रदान किया गया और 1865 में वहाँ का शासन पुनःराजा को दे दिया गया। नागौद रियासत 1831 से 1931 तक बघेलखण्ड एजेंसी का एक हिस्सा रहा फिर इसे अन्य छोटे राज्यों के साथ बुंदेलखंड एजेंसी को स्थानांतरित कर दिया गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई तो प्रारंभिक चरण में देसी रियासतों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा था किन्तु लगातार रियासतों की जनता का आन्दोलनों में भागीदारी रहती थी जिसके कारण कांग्रेस को अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पड़ा और 1920 के नागपुर अधिवेशन में यह निर्णय लिया की भारतीय देसी रियासतों में भी कांग्रेस का संगठन बनाया जाए ।[7] तत्पश्चात अजमेर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई । इसके बाद से रियासतों में कांग्रेस का संगठन बनने लगा इसी क्रम में नागौद में भी एक शाखा स्थापित हुई । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन 1931 करांची में हुआ तब विंध्य क्षेत्र के अवधेश प्रताप सिंह और राजभान सिंह ने भी इस क्षेत्र का नेतृत्व किया और वहां से वापस होने के बाद उसी वर्ष बघेलखण्ड कांग्रेस कमेटी का गठन किया गया जिसे अजमेर कांग्रेस कमेटी की भी मान्यता मिल गयी।[8]इस प्रांतीय समिति में नागौद के भी लोग सम्मिलित थे ।[9] स्वतंत्रता आंदोलन में भारत के रियासतों के साथ-साथ बीहड़ो, जंगलों, वनों में रहने वाले लोगों ने अपने प्राणों की आहुति यज्ञ रूपी आजादी में दिया । जिस समय भारत में उदारवादी (1885-1905 ईस्वी) नेताओं के माध्यम से अपने कार्यक्रमों को आयोजित किया जा रहा था ठीक उसी समय नागौद में भी राजनीतिक चेतना का आविर्भाव हुआ और यहाँ की नेताओं ने भी उन्हीं कार्यक्रमों के द्वारा जनता को जागरूक करने में लगे रहे ।[10] उदारवादियों के नेतृत्व में जब 1905 ईस्वी में वार्षिक कांग्रेस अधिवेशन बनारस में हुआ जिसमें नागौद के लोग भी सम्मिलित हुए और राजनीतिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किए । इसके पश्चात् निरंतर कांग्रेस के अधिवेशनों में यहाँ के लोग भाग लेते रहे और राष्ट्रवाद को व्यापक स्तर पर फैलाने के लिए प्रेरणा प्राप्त करते रहे ।[11]उन्हीं स्वतंत्रता के मतवालों में नागौद के जलद त्रिमूर्ति हैं जिनका सम्मान हमारी याददाश्त में समाहित है । इसी क्रम में विन्ध्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली नागौद रियासत में भी स्वतंत्रता का बिगुल बजा जिसमें जलद त्रिमूर्ति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा जिनके ऊपर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव रहा । विन्ध्य क्षेत्र में नागौद राज्य स्वतंत्रता आन्दोलन में धुरी रहा और अनेक आन्दोलनकारियों ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इनमें से प्रमुख थे पंडित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी , लाल लल्ला सिंह परिहार और ददन सिंह परिहार ।

जलद त्रिमूर्ति में 'ज' का अर्थ है 'पंडित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी' जो ग्राम सिद्धपुरा जिला सतना के रहने वाले थे । स्वतंत्रता सेनानी पंडित स्वर्गीय जगन्नाथ चतुर्वेदी जी का जन्म कार्तिक संवत 1956 विक्रमी पिता श्री जानकी प्रसाद चतुर्वेदी के घर ग्राम- सिद्धपुर, नागौद में हुआ था । इन्होंने अपर प्राइमरी शिक्षा कक्षा 4 तक की 1915- 16 ईस्वी में प्राप्त की । इसके पश्चात् परिवार का पालन-पोषण के लिए व कृषि कार्य एवं पाठ शालाओं में शिक्षक के रूप में कार्य करते रहे ।[12] ये गाँधी जी के सत्य एवं अहिंसा के समर्थक तथा

काव्य कला के निष्णांत प्रेमी थे । गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन का प्रसार तेजी से हो रहा था तो उसी समय नागौद में भी ब्रिटिश सरकार के विरोध में आंदोलन की तैयारी चल रही थी । इन्होंने स्वराज्य के अर्थ को भली भांति बताया साथ ही स्वतंत्रता, राष्ट्र, राज्य, देश, जनसेवा आदि की चर्चा भी की थी । धीरे-धीरे वे जगह-जगह होने वाली सभाओं में जाने लगे और विभिन्न प्रकार के विचारों को सुनकर अपने राजनैतिक जीवन को आगे बढ़ाना शुरू किया । इन्होने अंग्रेजों के खिलाफ प्रदर्शन करना शुरू कर दिया और कई बार इन्हें जेल भी जाना पड़ा । आपने जंगल कानून के लिए आन्दोलन चलाया तथा त्याग, तपस्या, अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों का पालन किया। स्वतंत्रता का मुख्य हथियार लेखन और भाषण था इसके कारण इन्हें स्वतंत्रता आन्दोलन में कई बार जेल गए। 1930 ईस्वी में जब सविनय अवज्ञा आंदोलन गांधी जी के नेतृत्व में चलाया जा रहा था तो धीरे-धीरे उसका प्रभाव तत्कालीन भारत के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ा तब नागौद में भी ब्रिटिश सरकार के विरोध में निरंतर विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा था । इसी समय यहाँ पर भी जन जागृति कार्यक्रमों से कांग्रेस सत्याग्रह के बारे में आंदोलन प्रारम्भ हुए । अंग्रेजो के विरोध में कार्यकर्ता राज्य के विरोध में समूह बनाकर आंदोलन करते और जेल में जाकर और ब्रिटिश के अत्याचार और दमन अहिंसात्मक रूप को सहन करते। इस दौरान अंग्रेजी सेना निर्दोष एवं निहत्थी जनता पर अमानवीय व्यवहार किया जाता था उनकी जमीनों को उनसे छीन लिया जाता था , अधिक से अधिक जुर्माना लगाया गया जिसका वहां वे नहीं कर सकते थे तथा उनके घर, भूमि की कुर्की कर दी जाते थी । इन्हीं अत्याचारों के विरोध फरवरी 19 31 में पंडित जगन्नाथ चतुर्वेदी ने नौकरी से त्यागपत्र देखकर अपने ग्राम सितपुरा में समूह बनाकर प्रदर्शन किया और सभाओं का आयोजन किया गया जिसके कारण उन्हें बंदी बनाकर जेल भेज दिया गया । उसी समय दूसरा समूह श्री राजबहादुर सिंह के नेतृत्व में भी आगे बढ़ा और सभी कार्यकर्ताओं को सजा देकर इंदौर में स्थित जेल में भेज दिया गया और उनके ऊपर कठोर कार्यवाही की गई ।[13]

इनकी जेल यात्राओं का विवरण - 1931 ईस्वी में चल रहे जंगल सत्याग्रह में भाग लेने के कारण इन्हें 21 महीने की कड़ी सजा सुनाई गई और इन्हें एक महीने नागौद जेल में रखने के बाद बिना किसी पूर्व सूचना के इंदौर में स्थित सेन्ट्रल इण्डिया एजेंसी जेल में भेज दिया गया और आगे की सम्पूर्ण सजा उसी जेल में काटनी पड़ी । इसके पश्चात् प्रजा मंडल सत्याग्रह नागौद का आंदोलन 1946 ईस्वी में चलाया गया और सितपुरा ग्राम सभा से नागौद जेल भेज दिया गया यहाँ पर इनके ऊपर राजद्रोह का अभियोग लगाकर 2 वर्ष की कड़ी सजा सुनाई गई किन्तु 2 महीने के पश्चात् इन्हें मुक्त कर दिया गया । 1946 में रहिकवारा ग्राम में गोली मारने के कारण फिर से सजा सुनाई गई किन्तु 2 माह के अंदर ही छोड़ दिया गया फिर 1947 में राज महिला भागने के आरोप में पुनः जेल भेजा गया किन्तु जल्द ही रिहा कर दिए गए ।[14] ये नागौद प्रजा मंडल के अध्यक्ष पद पर रहते हुए कुल छः बार जेल की यात्रा करनी पड़ी भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन्हें विंध्य प्रदेश प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी बनाया गया ।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अपने आंदोलन का संगठन और कार्य क्षेत्र नागौद के साथ-साथ मैहर, सोहावल, बुंदेलखंड के अंतर्गत छतरपुर, टीकमगढ़, फतेहपुर में जनता को प्रोत्साहित किया । इसके पश्चात राजपक्ष की ओर से किए गए अनैतिक बर्ताव एवं सितपुरा और नागौद लाठी चार्ज की जांच करने के लिए इंदौर के दो मंत्री श्री हामिद अली एवं श्री सीताराम जाजू को 1947 तथा श्रीमान श्री गोविंद दास को जबलपुर में आने के लिए मजबूर किया।[15] आपके द्वारा देश कैसा होना चाहिए उसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखी है–

अब चलो सोच यही सब, देश अपना है कहां ।
राज्य अपनी चल रही है, कौन क्या करता वहां।।
जिसको नहीं है ज्ञान, अपने देश सुंदर प्रांत का ।
उसको कहेंगे क्या नर कभी, है क्या पता सिद्धांत का ।।
राज्य अपने देश में] अपनी तो कहते हैं सभी ।
ठीक विधि से अब बता दे, क्या आपने सोचा कभी ।
अब ढूढ़िए चलिए कहीं से, क्या क्षितिज तक निज देश है।
यह तन मिला अपना यही, पर तन हुआ प्रदेश है ।।

आपके द्वारा स्वराज के लिए एक कविता लिखी गई जनमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत रही -

वह थी हमारी संस्कृति, शुचि पूर्वजों की त्याग की
देश के बलिदान की, परदेश के परित्याग की ।।
आज भी यह धूम है, हम देशवासी ली स्वराज्य ।
सोचें सभी दो खंड में ही , क्यों हुआ था यह विभाज्य ।।
द्वेष दूषित भावनाएं, भूल से ही चल रही ।
शाख - पल्लव वृद्धि भी हो, क्यों नहीं वह फल रही।।
आगे चखें फिर भी चखेंगे ,द्वेषता का फल सभी ।
जौलों सुमति आती नहीं है, क्या पड़ेगी कल कभी ।।
दुर्जनों ने पूर्व युग से, क्या-क्या नहीं जग में किया ।
जय प्राप्त की थी सज्जनों ने, शिक्षा यही तो है दिया ।।[16]

यहां तक कि इंदौर जेल में कारावास के दौरान कैदियों के लिए कुछ सुधार कार्य के लिए जिसमें प्रतिदिन कैदियों को दो घंटे की अनिवार्य शिक्षा के साथ जेल में स्वच्छ भोजन तथा साफ़ पानी की व्यवस्था करने के लिए मांग रखी ।

जलद त्रिमूर्ति में 'ल' का अर्थ है 'लाल लल्ला सिंह परिहार' जो कि खमरेही के रहने वाले थे इनका जन्म 1850 ईस्वी में हुआ था । नागौद में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त हाई स्कूल की परीक्षा हितकारिणी हाईस्कूल जबलपुर से पास किया । इन्होने मंडला में कुछ समय के लिए शिक्षक की नौकरी भी की किन्तु जल्द ही सरकारी सेवा छोड़कर नागौद क्षेत्र में चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस दौरान इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा । इनके हृदय में देश के प्रति प्रेम की भावना

ओत -प्रोत कर भरी थी । इन्हें हिंदी, बघेली, उर्दू तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था जिसके द्वारा राष्ट्रवादी विचारों को जनता के समक्ष बड़ी सहजता एवं सरलता के साथ रखते थे । जनता इनके व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावी थी । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में 1931 से देश को आजादी प्राप्त करने तक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाहन हमेशा करते रहे । अपने प्रभावशाली एवं उत्तेजक विचारों के कारण इन्हें 1931 जेल में भी जाना पड़ा ।

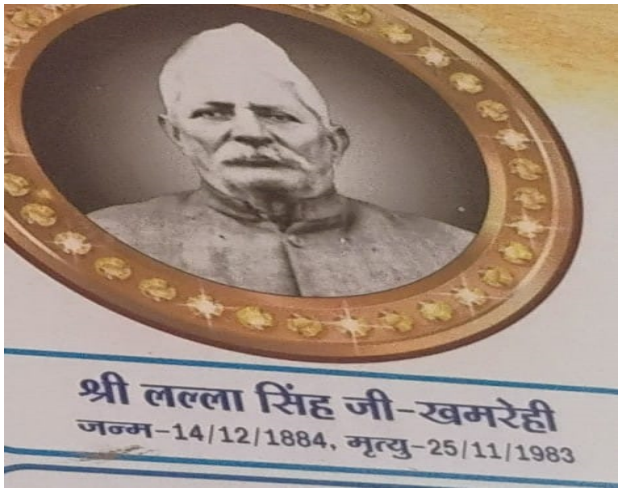

ये स्वभाव से सरल थे किन्तु लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, अपराध,तानाशाही के घोर विरोधी थे। ये विन्ध्य प्रदेश में पी.सी.सी.(प्रांतीय कांग्रेस कमेटी) के सदस्य भी रहे तथा जीवन भर समाज सेवा करते रहे । प्रभावशाली कार्यों के कारण आपको जिला कांग्रेस कमेटी सतना का अध्यक्ष भी बनाया गया साथ ही राज्य प्रजा परिषद् में भी रहे । निरंतर आंदोलन में भागीदारी के कारण इन्हें जनता सरकार में माल मंत्री के रूप में भी नियुक्त किया गया । आगे चलकर परिवार के अन्य सदस्यों ने भी स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया । इन्हें नीति निधान की संज्ञा दी गई थी।[17]भारत सरकार द्वारा इन्हें सम्मान निधि एवं ताम्र पत्र भी प्रदान किया गया तथा नागौद राज्य के शिलालेख में इनका नाम अंकित किया गया । इनके बारे में उक्ति है "

गठित प्रजा मंडल किया, साहस लिए अथाह।
स्वतंत्रता की चाह का था मन में उत्साह"। जलद त्रिमूर्ति

श्री ददन सिंह परिहार

'ददन सिंह परिहार' जो ग्राम अमकुई के रहने वाले थे । इनका जन्म सदर उबारीदार श्री जगत बहादुर के घर जून 1899 ईस्वी में हुआ था । इन्होंने मात्र कक्षा 4 तक ही पढाई कर सके किन्हीं कारणों से आगे की शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके और समय के साथ ये स्वतंत्रता की यज्ञ रूपी वेदी में शामिल हो गए । स्वाधीनता आंदोलन में अहम् भूमिका निभाने की प्रेरणा इन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली क्योंकि इनके पितामह श्री छत्रधारी सिंह ने 1857 के महासमर में भेलसायं के युद्ध में अपने प्राणो को बलिदान कर दिया था निश्चित ही इनके वीरगति को आपके छाप पड़ी होगी जिसके कारण भारतीय स्वाधीनता आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया और देश की सेवा की ।[18] भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में इन्होने बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लिया तथा 1931 से 1950 तक चले गांधीवादी आंदोलनों में इनकी भागीदारी नागौद क्षेत्र में प्रमुख रूप से रही और इनके गांधीवादी विचारों तथा कार्यों के कारण विन्ध्य क्षेत्र का गाँधी भी कहा जाता था । आन्दोलन के दौरान ये कई बार जेल गए और कठोर यातनाएं सहनी पड़ी । आंदोलन के समय इन्हें कई बार लाठी चार्ज का सामना करना पड़ा,कई बार जेल जान पड़ा और असहनीय पुलिस ज्यादतियों और यातनाओं को बर्दाश्त करना पड़ा ।[19] ये अकेले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें धारा 26(इस धारा के अंतर्गत कोई व्यक्ति किसी बात के विश्वास करने का कारण रखता है और यह विश्वास तब माना जाएगा जब वह व्यक्ति उस विश्वास का पर्याप्त कारण रखेगा) के तहत गिरफ्तार किया गया था । समाज सेवा के क्षेत्र में इनका योगदान अत्यधिक रहा इन्होंने महावीर सेवा समिति तथा दान प्रबंध कारिणी समिति में सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य किया । इन्हें विन्ध्य क्षेत्र में पी.सी.सी.(प्रांतीय कांग्रेस कमेटी)का सदस्य बनाया गया तथा नागौद क्षेत्र से कांग्रेस के सबसे पहले सदस्य बनें । कांग्रेस का सदस्य बनने से पूर्व जब ददन सिंह परिहार ने नागौद रियासत के सदस्यों को कांग्रेस का सदस्य बनने के लिए जवाहर लाल नेहरु से सतना रेलवे स्टेशन पर कहा तब नेहरु ने यह कह कर मना कर दिया कि गाँधी जी नहीं चाहते कि हिंसा में विश्वास रखने वाले लोग कांग्रेस के सदस्य बनें तब इन्होंने नेहरु जी को वचन दिया कि वे कभी हिंसक कार्य नहीं करेंगे इसके पश्चात् ही ये कांग्रेस के सदस्य बन सके । इन्होनें नागौद क्षेत्र को नशा मुक्त करने के लिए 30 दिन के लिए आमरण अनशन किया । 1939 कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन (जबलपुर) में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही जिसके पश्चात् नागौद रियासतों की जनता में उनका सम्मान बहुत अधिक बढ़ गया।[20] अंततः नागौद के अंतिम राजा एच.एच.श्रीमंत महेंद्र सिंहने 1 जनवरी 1950 को भारतीय राज्य में अपने रियासत के विलय पर हस्ताक्षर किये । स्वतंत्रता आन्दोलन में इनके कार्यों के कारण इन्हें भारत सरकार द्वारा ताम्रपत्र प्रदान किया गया । वर्तमान में नागौद महाविद्यालय का नाम आप तीनों के नाम पर रखा गया है । आप तीनों के व्यक्तित्व के बारे में उक्ति प्रचलित है।

"जगन्नाथ थे ज्ञान के अरु,लल्ला नीति निधान ।
ददन सिंह थे त्याग-तप,जलद त्रिमूर्ति महान ।।

सन्दर्भ सूची –

1. सतना जिले के राज्यों का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास , पृष्ठ-110.
2. अग्रवाल, डॉ.कन्हैयालाल, 2025,नागौद राज्य का इतिहास, शेखर प्रकाशन, प्रयागराज, पृष्ठ-1.
3. अग्निहोत्री, साहित्यरत्न गुरु रामप्यारे,2006 ,विंध्य प्रदेश का भूगोल,गया प्रसाद बुकसेलर, एण्ड पब्लिशर,रीवा ,पृष्ठ-37
4. सिंह,गजेंद्र, स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान 1986 ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-86.
5. राधेशरण, प्रोफेसर, 2001, विंध्य क्षेत्र का इतिहास,वृहत्तर बघेलखण्ड, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ.465 .
6. अग्रवाल, डॉ.कन्हैयालाल, 2025,नागौद राज्य का इतिहास, शेखर प्रकाशन, प्रयागराज, पृष्ठ-103.
7. बघेलखण्ड जिला कांग्रेस कमेटी का संक्षिप्त इतिहास पृष्ठ-1.
8. अग्रवाल,डॉ.कन्हैयालाल, 2025,नागौद राज्य का इतिहास, शेखर प्रकाशन, प्रयागराज, पृष्ठ-103.
9. विंध्यांचल छतरपुर (स्वतंत्रता संग्राम अंक)1954 ,पृष्ठ2.
10. सिंह,गजेंद्र,स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान 1986 ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-20.
11. सिंह,गजेंद्र,स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान 1986 ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-22.
12. चतुर्वेदी,पंडित जगन्नाथ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, नागौद परिचय,1956 ,गीता प्रिंटिंग प्रेस,सत्ती बाजार रायपुर,पृष्ठ-10/11.
13. मध्य प्रदेश सन्देश /15 अगस्त 1987 /अ -184.
14. चतुर्वेदी,पंडित जगन्नाथ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, आगामी-स्वराज्य,1956,संजय प्रिंटिंग प्रेस,सीधी,पृष्ठ-1/2/3/4.
15. सिंह,गजेंद्र,स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान 1986 ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-104/105.
16. चतुर्वेदी,पंडित जगन्नाथ,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, आगामी-स्वराज्य,1956,संजय प्रिंटिंग प्रेस,सीधी,पृष्ठ-8/9.
17. सिंह,गजेंद्र,स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान,1986,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-52.
18. सिंह, डॉ.अनुपम, विंध्य क्षेत्र के प्रतिहार वंश का इतिहास,2006-07.शेखर ऑफसेट,इलाहाबाद,पृष्ठ-483.
19. सिंह,गजेंद्र,स्वतंत्रता क्षेत्र में नागौद क्षेत्र का योगदान 1986,स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ तहसील नागौद,पृष्ठ-49.
20. सिंह, डॉ.अनुपम, विंध्य क्षेत्र के प्रतिहार वंश का इतिहास,2006-07.शेखर ऑफसेट,इलाहाबाद,पृष्ठ-483.